IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''नारी संघर्ष कल, आज, और कल – मालती जोशी की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में''

माधुरी चव्हाण (शिंदे)
शोधार्थी- हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविदयालय,
कोल्हापूर (महाराष्ट्र)

सारांशः

नारी स्वतंत्रता के कितने भी नारे लगाएँ जाए। नारी प्रगती, नारी शिक्षा के बारे में चिल्ला–चिल्लाकर कहा जाए लेकिन यह सब दिखावा लगता है, जब हम देखते है की नारी को कई कारणों से शोषित किया जाता है। पुराने जमाने से नारी का शोषण होता आ रहा है। चाहे वो उसके परिवार वालों से हो बाहर वालों से हो। पहले उसका शारिरीक, मानसिक शोषण होता था और अब आर्थिक शोषण भी, घर, परिवार, बच्चे सारी जिम्मेदारियाँ उठाते –उठाते अब उसे घर कि आर्थिक जिम्मेदारियाँ भी उठानी पडती है। इसका मतलब उसे अभी पत्नी का धर्म निभाते–निभाते पती के कंधे का बोझ अपने कंधे पर लेकर पती का धर्म भी निभाना पडता है और इतना कुछ करने के बावजूद भी उसे जो सम्मान, अधिकार मिलना चाहिए वो नही मिलता। मालती जोशी की कहानियों में यही प्रसंग, यही बाते अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत की गई है। हर कहानी अलग, उसका स्वरुप अलग और नारी की दुर्दशा का रुप भी अलग दिखाया गया है। और यह सब मालती जोशी ने अपनी अत्यंत सरल और मर्मस्पर्शी भाषा में प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्दः नारी संघर्ष, नारी स्वातंत्र्य, शोषण सहचारिणी, भावनात्मक मनोविश्लेषणात्मक

प्रस्तावनाः

21 वी सदी में नारी स्वतंत्र है सुरक्षित है एसा कहा जाता है, लेकिन कया सही मायने में यह सत्य है? नारी को शिक्षा का स्वातंत्र्य मिला, व्यक्ति स्वातंत्र्य मिला, वो खुद अपने निर्णय लेने के लिए सक्षम है। खुद को साबित करने के लिए सक्षम है। आजकल लगभग दुनिया का कोई भी ऐसा क्षेत्र नही है, जो स्त्री से अछुता रहा हो। सभी क्षेत्रों में वो अपने आप को शतप्रतिशत सिध्द कर चुकी है, साथ ही अपने माँ, बेटी, बहु, पत्नी, बहन सारे रिश्ते भी बखुबी निभाती है। फिर भी ऐसा लगता है कुछ कडियाँ बीच में छुट रही है, कुछ है जो हमें ठिकसे दिखाई नही दे रहा है। सारे रिश्ते, सारी जिम्मेदारियाँ उठाने के बाद भी अपने आप को हर तरह से सिध्द करने के बाद भी उसे जो सम्मान, प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए वो नही मिल पाती। हम ऐसा नही कहते की सभी जगह, सभी घरों मे ऐसीही स्थिती है। लेकिन जादातर जगहों पर हमें यही देखने को मिलता है। अपनी सारी जिम्मेदारियाँ कर्तव्य निभाने के बावजूद उसका स्थान समाज में हमेशा दुय्यम या कनिष्ठ ही रहा है। औरत को सिर्फ घर के कामकाज करनेवाली कामवाली या भोगवस्तू के नजर से देखा

जाता है। उसे कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार नही होता। आज बस इतनाही बदलाव हुआ है कि वो बाहर जाकर काम करने लगी है। और इसी कारण आज वो पैसा कमाकर देनेवाली मशीन भी बन गई है। यह स्थिती नाकि आज से बल्कि कई सालों से चलती आ रही है। और पता नही कबतक चलती रहेगी।

सदियों से चलती आ रही समस्याओं से जुझकर वो थक जाती है, हार जाती है रुक जाती है; लेकिन कुछ सहनशील नारियाँ ऐसी भी होती है जो सारी मुसिबतों का डटकर सामना करती है, लडती है, संघर्ष करती है। जब हम समाज में इधर–उधर नजर फेरकर देखेंगे तो ऐसे कई उदाहरण हमे देखने को मिल जाएँगे। लेकिन उनके दर्द को दु:ख को समझने के लिए हमें उनकी अनुभूतियों के गर्त से होकर गुजरना पडेगा। साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिससे हम इन अनुभवों को समझ सकते है। आजतक ऐसी बहुतसी लेखिकाएँ हो चुकी है जिन्होंने अपने साहित्य सृजन के माध्यम से नारी वेदना, नारी संघर्ष, नारी समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। जैसी की–कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, मन्नू भंडारी, शिवानो, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, सूर्यबाला और मालती जोशी।

मालती जोशी वह लेखिका है, जिन्होने उनके साहित्य के माध्यम से मुझे अत्यंत प्रभावित किया। मराठी भाषिक होने के बावजूद उनका हिंदी भाषा में साहित्य सृजन अनुठा है। मालती जोशी को 2018 में साहित्य तथा शिक्षा क्षेत्र में योगदान के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मालती जोशी का जन्म 1934 में औरंगाबाद, महाराष्ट्र में हुआ था। मध्यप्रदेश से शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने होलकर कॉलेज से स्नातक किया था। मालती जोशी जी ने अपने किशोरवस्था से ही कविता, लघुकथाएँ लिखना शुरु किया था। उनकी कहानियाँ इतनी प्रभावी थी की, यह कहानियाँ धारावाहिक के रुप में दूरदर्शन पर भी प्रसारित हा चूकी है। उन्होंने जया बच्चन द्वारा निर्मित शो 'सात फेरे' और गुलजार द्वारा निर्मित 'किरदार' के हिस्से के रुप में चित्रित किया है।

मालती जोशी के लेखन में महंगाई, दहेज, युवा लडकी का पिता इन सारी बातों का संघर्ष दिखाई देता है। उनकी कहानियाँ कुछ इसतरह है– एक घर सपनों का, मध्यांतर, मोरी रंग दे चुनरिया, अंतिम आक्षेप, बोल री कठपुतली, महकते रिश्ते, हाले स्ट्रीट, बाबूल का घर, शापित शैशव आदि। इसतरही की सामाजिक, मशेविश्लेषणात्मक कहानियाँ लेखन में मालती जोशी का बडा योगदान है। उनकी कहानियों में भावात्मकता और प्रतिकात्मकता दिखाई देती है। मालती जोशी के कहानियोंद्वारा समाज के विभिन्न अनुभूतियों को वाणी प्रदान होती है। उनकी कहानियों में नारी के अनेक समस्याओं का शोषण विदारक रुप प्रकट हुआ है जिससे कहानी पढ़ते वक्त वाचक एक अलग किताबी दुनिया में चला जाता है, उस नायक, नायिका के स्थान पर आत्मानुभूती का अनुभव प्राप्त करता है।

उनकी कहानियाँ राग–विराग में नारी की नियती को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती है।

कुछ कहानियाँ संक्षिप्त में–

1. ज्वालामुखी के गर्भ में–

इस कहानी में दो बहने हैं यजिन्होंने अपनी जिंदगी को कैसे कब्रस्तान बनाकव रखं है यह दिखाया गया है।

2. सहचारिणी–

इस कहानी की नायिका नीलम है। जो परिवार पर बोझ की तरह है जिसकी वजह से उसकी शादी बिना जादा कुछ पुछताछ के करवाई जाती है। बाद में पता चलता है उस आदमी की पहले से शादी हो चुकी है और उसका एक बच्चा भी है।

3. पाषाण युग–

पाषाण युग इस कहानी में मालती जोशी ने बेमेल विवाह के प्रश्न को उठाया है।

4. निष्कासन में–

इस कहानी में माँ बेटी के बीच पडी दरार को दिखाया है जिससे बेटी पागलों जैसी हरकते करने लगती है।

5. मोरी रंग दी चुनरियाँ–

मोरी रंग दे चुनरिया कहानी में मालती जोशी ने दिखाया है की– आदिम युग से आज तक नारी का शोषण होता आ रहा है। स्वतंत्रता बस नाम की है। बस बदलाव इतना है की पहले शोषण शारीरिक, मानसिक था अब वर्तमान में आर्थिक बोझ भी उसके गर्दन पर आ पड़ा है। अब तो वह केवल बच्चे जनने की मशीन ही नही पैसा कमाने की भी मशीन बन चूकी हैं। इस कहानी की नायिका जया का ब्याह हो रहा था तभी उसके दुल्हे को मिरगी का दौरा पड़ता है। यह देखकर जया के पिता इस शादी से इनकार करते है और आधी–अधुरी शादी छोडकर बारात वापस चली जाती है।

इस घटना के बाद कितने सारे अच्छे रिश्ते आने के बावजूद उसके पिता जया की शादी से इनकार करते है। इन सारी चिजों से उभरकर जया अच्छी खासी पढ़कर अपने पैरो पर खड़ी हो जाती है। लेकिन उसके परिवार के लोग उसके शादी के बारे में नही सोचते क्योकि वो अब उनके लिए पैसा कमाने की मशीन बन चुकी है। कुछ साल बाद जब उसकी टुटी हुई शादी का वो लडका मर जाता है तब उसके बिमें के मिलनेवाले पैसोपर हक जमाने केलिए जया के परिवार वाले उसपर दबाव बनाते है। अपना खुद का आय बनाने के बावजूद परिवार के दबाव कारण उस विधवा का नाटक करना पड़ता है जो उसे बिलकुल सही नही लग रहा। यह सब नाटक बंद करने के लिए जया अपने जीवन की सारी कमाई भाईयों को देने के लिए तैयार है।

इसतरह से पढ़ी–लिखि जया के साथ उसका परिवार ऐसे बर्ताव करता है तो और औरतों के बारे में क्या ही कहना। मालती जोशी की ऐसीही बहुतसी कहानियाँ है जो बताती है की नारी भलेही शिक्षित हो चुकी है, स्वतंत्र हो चुकी है या यह सिर्फ दिखावा है। क्या सिर्फ नारी शोषण का रुप बदल चुका है, स्थिती तो वही है। शोषण तो आज भी वही है बस नजरियाँ बदल चुका है। नारी ता आज भी वैसेही है। उसी जगह पर, जैसे कल थी आज है और शायद कल भी रहेगी।

निष्कर्ष–

मालती जोशी ने अपने कहानियों द्वारा नारी शोषण के विविध रुपों को दिखाने का प्रयास किया है, जिससे पता चलता है कि नारी का शोषण करने वाले जादातर लोग उसके परिवार वाले होते है। बस उनका नाम अलग है। नारी शिक्षा, नारी स्वतंत्रता बस नाम की है। नारी समस्याओं का सिर्फ रुप बदला है बाकि तो सब नाटक है। इन सारी चिजों से ही अभी नारी को उभरना होगा। अपने लिए अपने अस्तित्व के लिए आवाज उठानी पडेगी, लढना होगा खुद के लिए और अपने आने वाली कन्याओं की पीढी के लिए ताकि उन्हे भी एक प्रगतिवादी मिसाल मिले और अपने अस्तित्व के लिए वो सजग हो उठे। मालती जोशी की कहानियों में ये सब बाते बखुबी दिखाई देती है, इसका मुझे सार्थ अभिमान है।

संदर्भः

1. मौरी रंग दे चुनरिया – सन 1992
2. स्मारिका –सन1994
3. मालती जोशी–बोल रे कठपुतली –सन 1985
4. मालती जोशी व्यक्तित्व कृतित्व – अलाबक्स जमादार
5. मालती जोशी की कहानियाँ – सन 1983